28 सामाजिक विज्ञानों ने क्यों मुझे कभी आकर्षित नही किया!

नीरजा राघवन

''इतिहास सीखने का क्या उपयोग है?'' एक 13 वर्ष की लड़की के रूप में मैंने सबकी नजरें बचाते हुए इस प्रश्न को प्रश्न बक्से में इस उम्मीद के साथ डाल दिया कि मेरी शिक्षिका का इस पर रोशनी डालने वाला उत्तर मिलेगा। उनके मुँह पर इस प्रकार का प्रश्न पूछने का दुःसाहस मुझमें नहीं था। मैं अब भी याद कर सकती हूँ कि कैसे मैंने उत्सुकता से बक्से में से उनके द्वारा अपने प्रश्न के निकाले जाने का इन्तजार किया था।

उस दिन बक्से में ढेर सारी पर्चियाँ थीं।

उन्होंने काफी समय लिया; तरसाते हुए और कई सारे अन्य प्रश्नों से होते हुए पीरियड के सबसे आखिर में वे उस प्रश्न पर पहुँचीं। मेरी निराशा की कोई सीमा नहीं रही जब उन्होंने यह कहते हुए उसे हँसी में उड़ा दिया, ''और यहाँ पर अन्तिम प्रश्न है: इतिहास सीखने का क्या उपयोग है?'' उनके साथ सभी हँसने लगे लेकिन मेरी शिक्षिका बिना कोई उत्तर दिए जाने के लिए उठ खड़ी हुईं।

अपने सवाल से स्वयं ही जूझने के लिए मुझे अकेला छोड़ दिया गया था; इसका प्रयास मैंने स्कूल के अपने अन्तिम दिनों तक किया, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। मैंने 13 वर्ष की उम्र तक तो सभी दिए गए विषयों को विनीत भाव से पढ़ा लेकिन कक्षा 9 में पहुँच कर जब मुझे आगे विकल्प चुनने की सम्भावना दिखाई देने लगी तो मैंने उनकी उपयोगिता पर सवाल उठाना शुरू किया।

''जब कोई बात समाप्त हो जाती है और हम उससे निपट जाते हैं तो फिर हम उसे विस्तार सहित याद करने की परेशानी क्यों उठाएँ?'' मैं यह सोचती रहती। विज्ञान का आकर्षण इतना अधिक शक्तिशाली था कि किसी को उसकी उपयोगिता के बारे में मुझे विश्वास दिलाने की जरूरत नहीं थी। वाकई में मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी मेरे सहपाठियों में से किसी ने भी विज्ञान के बारे में यह सवाल पूछा हो कि ''विज्ञान पढ़ने का क्या उपयोग है?'' उबाऊ? हाँ कइयों ने यह महसूस किया कि वह उबाऊ था। कठिन? निश्चित रूप से कुछ इससे सहमत थे। लेकिन 'अनुपयोगी?' किसी ने भी ऐसा नहीं कहा होगा।

शायद इसका कारण इस विषय की आपको एक सुनिश्चित दिशा में ले जाने की खूबी थी चाहे वह एक चिकित्सक का कार्यक्षेत्र हो, या इंजीनियर का, या वैज्ञानिक का, या शायद इसे पढ़ना ही सबकी राय में 'करने जैसी' चीज थी – कारण जो भी हो, किसी को मेरी कक्षा के साथियों (या मुझे) को विज्ञान पढ़ने की जरूरत के बारे में समझाने की आवश्यकता नहीं थी। हाँ, हममें से कुछ की अपनी प्राथमिकताएँ थीं, जब हमने जीव विज्ञान को चुनना पसन्द नहीं किया (जब मुझे किसी भी हाल में चिकित्सक नहीं बनना, तो मैं मेंढ़कों को क्यों काटूँ?) लेकिन भौतिकी, रसायन शास्त्र और गणित शुरू से ही हमारे साथ चलने वाले विषय थे, इसमें कोई शक नहीं था।



भूगोल की तो और भी कम जरूरत महसूस होती थी; उससे तो ऐसे किन्हीं शक्तिशाली लोगों के नाम भी नहीं जुड़े थे जो उसका उद्धार करते। वास्तव में किसे परवाह थी कि शीतोष्णकटिबन्ध इलाकों में पर्णपाती पेड़ थे, या किसी और जगह पर सोने की खदानें थीं? नक्शों में आँखें गड़ाए रहने और उन्हें बनाने की कला में पारंगत होने से लेकर, विभिन्न जलवायु वाले इलाकों और उनमें पैदा होने वाली फसलों को याद करने तक, यह एक ऐसा अन्य विषय था जिसको चुनने वाले ज्यादा नहीं थे। मुझे सिर्फ एक ऐसी शिक्षिका याद हैं जो इसकी वकालत 'तर्कसंगत विषय' के रूप में करती थीं। लेकिन वे भी मुझे इसकी उपयोगिता का भरोसा नहीं दिला सकीं।

संक्षेप में, सामाजिक विज्ञानों को समर्पित पीरियड ही ऐसे थे जिनमें सबसे ज्यादा जम्हाइयाँ ली जाती थीं। हम मुगल रानियों की तस्वीरों पर मूँछें और विकट भौंवे बना कर और प्रभावशाली राजाओं के चेहरों पर बिन्दियाँ और काजल लगी पलकें बना कर अपनी कक्षाओं को जीवन्त बनाते थे। पुराने चित्रों की फिर से बनाई गई इन प्रतिकृतियों को डेस्क के नीचे से एक–दूसरे को देते हुए हम धीरे–धीरे हँसते थे क्योंकि इतिहास की उबाऊ कक्षाओं में हमारे मनोरजंन का सिर्फ एक यही साधन था। एकमात्र ऐतिहासिक व्यक्तित्व जो हमारी बिगाड़ने वाली कलमों से बच गए थे, वे थे अत्यन्त सुन्दर दिखने वाले लॉर्ड माउण्टबेटन; इसका कारण तो स्पष्ट ही है।

इससे मैं उस बात पर आती हूँ जिसे मैं किसी विषय के चुम्बकीय स्रोत के रूप में देखती हूँ; सीखने वाले को उसमें क्या चीज अपनी ओर खींचती है? मेरा यह अनुमान है कि जो चीज सिखाई जाती है, सीखने वाले के दृष्टिकोण से उसमें इन तीन गुणों में से कम से कम एक तो होना ही चाहिए: प्रासंगिक, उपयोगी या सुन्दर (या कम से कम आकर्षक)। उदाहरण के लिए हममें से अधिकांश को विज्ञान

क्यों आवश्यक प्रतीत होता था? एक तो वह अत्यन्त प्रासंगिक था। कोई इस तथ्य को नकार नहीं सकता था। निश्चित ही हमें ब्रह्माण्ड के नियमों के बारे में, लाए जा सकने वाले बदलावों के बारे में, और हमारे आस–पास के पेड़–पौधों और जीव–जन्तुओं के बारे में जानने की जरूरत थी। इसकी तुलना में पानीपत की लड़ाई की तारीखों या राजा अशोक के द्वारा लाए गए परिवर्तनों के बारे में सोचें..... जम्हाई! हममें से ज्यादा गुस्ताख छात्रों को यह पूछने का मन होता था कि इसके बजाय हमारी मौजूदा सरकार के द्वारा लाए जा रहे परिवर्तनों के बारे में जानना क्या हमारे लिए ज्यादा अच्छा नहीं होगा।

और हाँ, विज्ञान उपयोगी था। उसने हमें इन सभी चीजों का पता लगाने में मदद की, जैसे दूध खट्टा क्यों होता है, पौधे कैसे वृद्धि करते हैं, और किसी घाव की पट्टी कैसे की जाती है। उसने हमें अधिक व्यवस्थित और अधिक निष्कर्षात्मक ढंग से सोचने की प्रेरणा दी। उसने हमें मान्यताओं के पीछे के सच को ढूँढने के लिए प्रेरित किया। उसने हमारे जीवन को अधिक आरामदायक बनाने में हमारी मदद की। हमें इसकी जरूरत थी; चाहे दुर्भाग्य से हमें इस विषय को पढ़ाने के लिए कोई उबाऊ शिक्षक ही क्यों न मिला होता।

> *गणित की नियमित संरचनाएँ, विज्ञान का सुन्दर तर्काधार, और उसकी हमारे वर्तमान जीवनों से असन्दिग्ध सम्बद्धता; मुझे इतिहास और भूगोल में इन सभी बातों का अनुपस्थित होना एकदम खटकता था।*

और हाँ! कभी–कभी विज्ञान सुन्दर भी होता था; हाई स्कूल के रसायन शास्त्र के मेरे प्रारम्भिक सम्मोहन से लेकर एमएससी के दिनों में हमारे शरीरों में डीएनए की जटिलताओं से पूरी तरह अभिभूत होने के अनुभव तक, मेरे लिए विज्ञान और सुन्दरता में शायद ही कभी तालमेल न रहा हो। (कुछ भाग्यशाली साथियों को यह अनुभव गणित में होता था, लेकिन उनके बारे में किसी और समय।) अक्सर किसी विषय के लिए मेरे प्रेम को निर्धारित करने में सुन्दरता एक सर्वोपरि विशेषता होती थी। मेरी नजरों में काव्य न तो उपयोगी था और न ही प्रासंगिक; लेकिन हाँ, वह अक्सर सुन्दर होता था। साहित्य निश्चित ही सुन्दरता से भरपूर था जिसे मैं नहीं नकार सकती। लेकिन भूगोल और इतिहास के वर्णन के लिए मैंने अनाकर्षक धूसर रंग का ही इस्तेमाल किया होता। (दूसरी ओर विज्ञान, साहित्य और कभी–कभी गणित में भी चमकदार बैंगनी, गुलाबी आदि रंगों की लहरें हर तरफ़ इठलाती रहती थीं।)

सामाजिक विज्ञान के इन तीन पैमानों पर खरा न उतरने के बावजूद भी, अब मुझे लगता है, कि यदि वह सिर्फ आसान होता तो भी हमने उसे चुन लिया होता। गणित के किसी सवाल को हल करने और फिर सही उत्तर प्राप्त कर लेने में आने वाले आनन्द की किसे याद नहीं है? गणित के किसी सवाल को आखिरकार हल कर पाने में मिलने वाला अनोखा संतोष ही गणित को अधिक सहनीय बनाता है। पर सामाजिक विज्ञान में आप केवल तभी सही होते थे जब आपकी याददाश्त आपको धोखा नहीं देती थी। आप इसके प्रश्नों के उत्तरों को केवल सोच कर नहीं निकाल सकते थे, कम से कम हमें तो ऐसा ही भरोसा दिलाया गया था।

मेरे लिए इस विषय का जो आखिरी आधार हो सकता था वह यहीं आकर गिर गया, क्योंकि यह मुझसे जरूरत से ज्यादा विशिष्ट स्मृति की माँग करता था। इसलिए मैं इसे छोड़ने के लिए तत्पर थी, और मैंने मौका मिलते ही इसे छोड़ दिया।

इस प्रकार इतिहास और भूगोल मेरे लिए सिर्फ तथ्यों के ऐसे समूह थे जिनको याद रखे बिना भी कोई व्यक्ति अपना जीवन काफी अच्छे से बिता सकता है। इनमें नियमित संरचनाएँ कहाँ थीं? प्रवृत्तियाँ? हमारे अपने जीवनों के साथ इनका सम्बन्ध ? इन सब चीजों का या तो अस्तित्व ही नहीं था या ये उन ढेर सारे तथ्यों के नीचे दबी हुई थीं जिन्हें हमें याद रखना पड़ता था। यह तो जब मैं अपने कॉलेज दौर में पहुँच गई, तब जाकर मुझे अहसास हुआ कि शायद अतीत के अध्ययन के कारण कोई व्यक्ति अपने वर्तमान को बेहतर ढंग से जी सकता है। यद्यपि मुझे लगातार यह महसूस होता था कि इस उबाऊ विषय को हमारे गले के नीचे उतारने या हमारे ऊपर थोपने के लिए यह एक कमजोर बहाना बनाया जाता था – क्योंकि मुझे अपने चारों ओर एक भी ऐसा व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र नहीं दिखाई देता था जो अपने स्वयं के इतिहास से कुछ सीख चुकने के कारण कम गलतियाँ कर रहा था (या बेहतर जीवन जी रहा था)। वह 'ज्ञान' – यदि आप उसे यह कह सकें तो – उनकी इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के धूलभरे आवरण पृष्ठों के बीच में सुरक्षित रूप से नीचे दबा हुआ था, कोई भी उसे अपने रोजमर्रा के जीवन में लाने की कोशिश नहीं करता था। प्रसिद्ध लोगों की जीवनियाँ पढ़ने का आकर्षण, जो मेरे कॉलेज वर्षों के दौरान विकसित हुआ, जरूर मुझे अवचेतन मार्ग से उस ओर ले गया जिसे मैं 'इतिहास' कहूँगी; लेकिन यह बात बहुत भिन्न थी! क्योंकि इन अद्भुत किताबों के पन्नों में निर्जीव तारीखों और उबाऊ घटनाओं के बजाय लोग रह रहे थे। मेरी स्कूल की इतिहास की किताबों में मानवीय तत्वों का पूरी तरह से अभाव दिखाई देता था।

> *इस प्रकार इतिहास और भूगोल मेरे लिए सिर्फ तथ्यों के ऐसे समूह थे जिनको याद रखे बिना भी कोई व्यक्ति अपना जीवन काफी अच्छे से बिता सकता है। इनमें नियमित संरचनाएँ कहाँ थीं? प्रवृत्तियाँ? हमारे अपने जीवनों के साथ इनका सम्बन्ध ? इन सब चीजों का या तो अस्तित्व ही नहीं था या ये उन ढेर सारे तथ्यों के नीचे दबी हुई थीं जिन्हें हमें याद रखना पड़ता था।*

कई दशकों बाद, जब मैं हिमालय की यात्रा कर रही थी तब मैंने कई विभिन्न प्रकार की चट्टानों और पत्थरों को देखा, उनकी अलग–अलग सतहें और रंग उस क्षेत्र की संरचनाओं का जैसे मुखर होकर वर्णन कर रहे थे। किसी ने मुझे कभी यह क्यों नहीं पढ़ाया? मैंने आश्चर्य किया। उत्तरकाशी की सीढ़ीदार ढलानें, पर्वत पर रहने वाले लोगों की अनोखी पाक शैली और उनके पसन्दीदा आहार; ये जितने सार्थक थे उतने ही विस्यमकारी भी थे। इसके कारण मुझे यह जानने में दिलचस्पी हो गई थी कि ये लोग कैसे रहते थे। पोंपई की पत्थरों से पटी गलियों में चलते हुए यह सोच कर मेरे रोमांच का कोई ठिकाना नहीं था कि इन्हीं पत्थरों पर रोमन सम्राट भी चले थे। लोथल में सिन्धु घाटी की सभ्यता के खण्डहरों को देखना मेरे वयस्क जीवन का ऐसा दूसरा वक्त था जब मैंने इतिहास को रोमांचपूर्वक पढ़ने की विराट सम्भावनाएँ देखी थीं।

अफसोस! ये सब अधूरे स्वप्न थे; इतिहास और भूगोल पढ़ना अब तक के मेरे सबसे बदरंग अनुभवों में से एक रहा है। ये विषय पढ़ाने के लिए हमारे शिक्षकों ने जिस भावनात्मक तूलिका और रंगपट्टी का इस्तेमाल किया था वे सूखी और बिना रंग की थी। शायद उन सूखे रेगिस्तानों और शानशौकत वाले राजाओं ने उनके सारे रंग सोख लिए थे।

नीरजा राघवन *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बंगलौर में एकडेमिक और पैडागॉजी सलाहकार हैं। वे कई वर्षों तक स्वतंत्र लेखिका रही हैं। प्रतिष्ठित समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में उनके सत्तर से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने तीन पुस्तकें (क्यूरियसर एण्ड क्यूरियसर, फुल सर्किल 2004, आई वण्डर व्हाय एण्ड आई वण्डर हाऊ, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट 2005, 2006) लिखी हैं और एक पुस्तक (आल्टरनेटिव स्कूलिंग इन इण्डिया, सेज पब्लिकेशन्स 2007) की सह–लेखिका हैं। उन्होंने एक सीडी, अन्डरस्टैंडिंग रिलीजन्स (जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट, लडानूँ, राजस्थान 2004) का सम्पादन भी किया है। उनसे इस* neeraja@azimpremjifoundation.org *ईमेल पर सम्पर्क किया जा सकता है।*